REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

मराठा काल के मंदिर

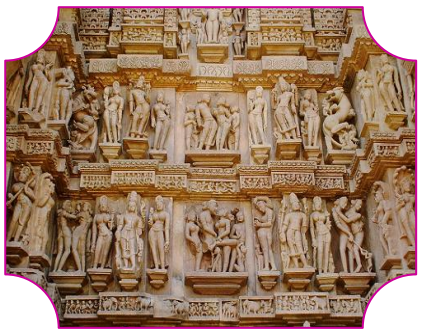

डा. मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

❊ सारांश :

सोलंकी समय के शिल्प कला में देखा जाए तो शिव और परिवार की अलग अलग प्रकार की प्रतिमाएँ, देव-देवीओंमें खास करके लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती की प्रतिमाएँ मुख्य है। अन्य गौण देवीओं की भी प्रतिमाएँ देखने को मिलती है। उसमें अदिति, वैकुंठ, वैरागी, कंकाल दंडधारिणी की प्रतिमाएँ मूर्तिविधान की द्रष्टि से नोंधपात्र कही जाय। देवताओंमें विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य की प्रतिमाओं का समावेश कर शकते है। दिकपाल प्रतिमाएँ मंदिरो के मंडावर के गवाक्षो में या कोण भाग में मिलने लगते है। कभी कभार शिल्पें रंग मंडप की छत नीचे मंदिर के मुख्य विमान की बहार क भाग में गवाक्षो में या कीर्ति स्तंभ के बहार के भाग में भी नजर आते है। कितनी जगाअें व्यास और कीचक के शिल्प भी देखने को मिलते है। नरकिचक और स्त्रीकिचक दोनो प्रकार के शिल्प देखने को मिलते है। सभी तरीके से देखें तो सोलंकीकालीन शिल्प उसकी आगवी शैली अलंकरण, शिल्प प्रकार, प्रादेशिक और स्थानिक शैली के संमिश्रणयुक्त विविधता वाले बने है, ऐसा अभ्यास पर से कह सकते है।

सल्तनतकाल से मराठाकाल तक के शिल्पो में खास कोइ फरफार हुआ देखने को मीलता नहीं. जबकी सल्तनत समय में धार्मिक शिल्प कम हुए और फ्ल-वेल की कोतरकाम ज्यादा नजरे पडती है। कला की शाखा चित्रकला का भी मैं थोडा अभ्यास करके मेरे शोधनिबंध में नोंध की है।

❊ भुतियावासणा :

पाटण के पास भुतियावासणा गाम आया है वहाँ भूतेश्वर महादेव का मंदिर यह काल का है। मंदिर के भव्य और अलंकृत दरवाजो उस की शोभा बढ़ाते है।

❊ कडी :

कडी में यवतेश्वर महादेव का मंदिर, रामकृष्ण मंदिर और हाल की मामलतदार कचेरी तीनों ईमारत इस काल की गायकवाडी प्रभाव धराते है। यवतेश्वर मंदिर दीवान बाबाजी के पुत्र ने बनवाया था। उसमें दक्षिण भारत के शिवालयो में देखने को मिलता है। ऐसा नंदि-मंडप रंगमंडप से छूटा किया है।

❊ सिद्धपुर :

सिद्धपुर में सरस्वती के सामने कांठे आया हुआ मठ इंदोरना महाराणी अहल्याबाइने ई.स.१७९५ में किया हुआ था। दीवान बाबाजीने १९ मो सदी के प्रारंभ में यहाँ सिद्धेश्वर, गोदि महादेव और नीलकंठ महादेव नाम के तीन मंदिर बंधाये। उसमें सिद्धेश्वर का मंदिर नदीतट पे आया हुआ प्रख्यात मंदिर है। उंचे प्रकार के मध्य में शिखरबंध भव्य मंदिर खडा है।

❊ बहुचराजी :

बहुचराजी (जि.महेसाणा) में माताजी का नया देवालय दामाजीराव गायकवाड के नाना कुमार मानाजीरावने संवत १८३९ (ई.स.१७८३) में बंधाया था और देवालय के चारों तरफ कोट बनवाकर नजदीक में मान सरोवर नाम का कुंड किया। यह देवालय पथ्थर के पुरानी बांधणी पद्धति के गर्भगृह गूढ़ मंडप और सभामंडप से मुक्त है। गूढमंडप के बजाये बहार का सभामंडप बडे कद का है।

❊ जैन मंदिर :

यह काल में १०० जितने जैन मंदिर बनवाये और बहोत से जीर्णोध्धार पामे हुए है। पालनपुर के कमालपुरा के संभवनाथ तथा प्रेमचंद पारेख के वासमा के आदिनाथ, आसेडा (ता.डीसा) के बजार के आदिनाथ, वातम (ता.दियोदर) के जूना वासमा के आदिनाथ, दुआ (ता.धानेरा) के बाजार में आया हुआ कुंथुनाथ तथा अमीझरा पार्श्वनाथ, घोडीआल (ता.वडगाम) के वाणिया शेरीमा के पार्श्वनाथ, गोणा (ता.वडगाम) के वाणिया महोल्ला के महावीर स्वामी, मेमदपुर (ता.वडगाम) के बाजार के आदिनाथ, भागण (ता.पालनपुर) के वाणिया वासमा के आदिनाथ, थरा (ता.थराद) के बजार में आया हुआ शांतिनाथ, नायका (ता.समी) के बजार में शांतिनाथ, पाटण की चौधरी शेरीमा के विमलनाथ (घर-देरासर), विसनगर के कडा दरवाजा पास का कल्याण पार्श्वनाथ, उमता (ता.विसनगर) गाम में आया हुआ कुंथुनाथ, गुंजा (ता.विसनगर) का वाणियो के माढ में शांतिनाथ, उँझा में तलाटी माढ में आया हुआ शांतिनाथ (घर-देरासर), गांभु (ता.चाणस्मा) का गंभीरा पार्श्वनाथ, धीणोज (ता.चाणस्मा) के बाजार में आया हुआ शीतलनाथ, (जैन बाद गाम का शांतिनाथ), लाडोल (ता.विजापुर) में बाजार में आया हुआ पार्श्वनाथ, वाघपुर (ता.प्रांतिज) में वाणियावास का अजितनाथ, इलोल (ता.हिंमतनगर) के बाजार में आया हुआ कुंथुनाथ तथा आदिनाथ के, हापा (ता.हिंमतनगर के बाजारमां आया हुआ नेमिनाथ, लांधणज (ता.महेसाणा) में आया हुआ शांतिनाथ, समौ (ता.विजापुर) के बाजार का पार्श्वनाथ, लोद्रा (ता.विजापुर) गाम का अभिनंदन स्वामो का है।

यह जिनालय पैकी कितने घर-देरासरो बाद करके ज्यादातर शिखरबंध है। कितने बडे मंदिरो में तीन गर्भगृह और कवचित पांच गर्भगृह किये हुए है। मंडप को भी कभी गूढमंडप का स्वरुप दिया है। ज्यादातर मंदिरो में मंडप में से शणगार चौकी निकाली है। यह जिनालयो में प्रतिष्ठित तीर्थकरो की प्रतिमाओ ज्यादातर सपरिकर पंचतीर्थ प्रकार की है और शास्त्रीय तौर पर घडी हुई यह मूर्तिओं में लांछन, यक्ष-यक्षिणी और तीथिकर की सिध्धिओं आदि दर्शाया हुआ है। उपरांत दूसरे मूर्ति शिल्पो में से तथा बारीक कोतरणी से सभी मंदिर सजाये है। यह पैकी कितने नोंधपात्र है।

❊ तोरण :

महेसाणा जिल्ला के विसनगर तालुका में आया हुआ वालम गाम में रणछोडजी मंदिर नाम का प्रख्यात वैष्णव मंदिर के सामने एक कीर्ति तारण है। यह तोरण के स्तंभ पर विष्णु के अवतार (स्वरुप) का कोतरणी काम किया है।

विजयनगर के पोलो के मंदिर के सामने भी एक स्वतंत्र्य तोरण आया है।

आखज तोरण (ता.कडी, जी.महेसाणा) के कुंड में एक कोने पर खंडित तोरण के अवशेष मौजुद है। जिसकी रचना मोढेरा के कुंड के पूर्व किनारे के तोरण जैसे ही है।

❊ संदर्भसूचि :

१. शास्त्री हरिप्रसाद गं. और अन्य लेखक (संपादक), ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास ग्रंथ-४ (सोलंकीकाल), पहली आवृत्ति, शेठ भो.जे.अध्ययन, संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद-१९७६
२. शाह प्रियबाला, 'जैन मूर्ति विधान'', पहली आवृत्ति, ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद-१९८०
३. परीख रसिकलाल छो. और शास्त्री हरिप्रसाद ग्रं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-६, सल्तनतकाल, पहला संस्करण
४. परीख रसिकलाल और संपादक, ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-७, मराठाकाल

डा. मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.